श्री दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम स्तोत्रं

श्री दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम स्तोत्रं

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गाऽऽपद्विनिवारिणी |
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी || 1 ||

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहंत्री दुर्गमापहा |
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला || 2 ||

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी |
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता || 3 ||

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी |
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी || 4 ||

दुर्गमासुरसंहंत्री दुर्गमायुधधारिणी |
दुर्गमांगी दुर्गमाता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी || 5 ||

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गधारिणी |
नामावळिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः || 6 ||

पठेत्सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः |
शत्रुभिः पीड्यमानो वा दुर्गबंधगतोऽपि वा |
द्वात्रिंशन्नामपाठेन मुच्यते नात्र संशयः || 7 ||

इति श्री दुर्गा द्वात्रिंशन्नामावळि स्तोत्रं |